डॉ अंबेडकर : आधुनिक भारत के मुख्य शिल्पकार के रूप में

डॉ शालिनी सिंघल,

(सह-प्राध्यापक, इतिहास विभाग)

कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज,

दिल्ली विश्वविद्यालय

Abstract

Dr. B.R. Ambedkar's popular name was "Babasaheb Ambedkar." Babasaheb was the architect of the Indian Constitution and is also regarded as a prominent global leader and jurist. His efforts toward the upliftment of society and his contributions were of immense significance. Babasaheb made outstanding efforts against social evils such as untouchability, caste hierarchy, and the varna system through relentless struggle. Throughout his life, he fought for the rights of Dalits and other socially disadvantaged groups. His major contribution was his vital role in drafting the Indian Constitution after independence. He served as the Chairman of the Drafting Committee of the Constitution. His contributions are remembered as those of a key architect in the creation and establishment of various institutions in independent India. Dr. Ambedkar was appointed as the first Law Minister of independent India in Jawaharlal Nehru's cabinet. On October 14, 1956, he embraced Buddhism and initiated a significant religious transformation. Posthumously, the Government of India honored him with the Bharat Ratna award in 1990. This research paper has been compiled based on various sources.

सारांश:

डॉ बी आर अंबेडकर का लोकप्रिय नाम 'बाबा साहेब अंबेडकर' था। बाबासाहेब भारतीय संविधान के निर्माता थे और उन्हें एक प्रमुख विश्व प्रिय नेता और विधिवेत्ता भी माना जाता था। उनके उपासने और समाज में उत्थान के लिए उनके प्रयास अत्यधिक महत्वपूर्ण थे। बाबासाहेब ने अपार संघर्ष करते हुए अस्पृश्यता, वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ उत्कृष्ट प्रयास किए। उन्होंने अपने जीवन भर दलितों और अन्य सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के अधिकारों और हितों के लिए लड़ा। उनका प्रमुख योगदान आजाद भारत का संविधान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही। वे संविधान सभा में प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। उनके योगदान को स्वतंत्र भारत के विविध संस्थानों के निर्माण और स्थापना में मुख्य शिल्पकार के रूप में याद किया जाता है। डॉ अंबेडकर को नेहरू के मंत्रिमंडल में देश के पहले कानून मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया था। उन्होंने 14 अक्टूबर 1956 को बौद्ध धर्म में दीक्षित होकर वृहत धार्मिक परिवर्तन किया। मरणोपरांत, भारत सरकार ने 1990 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया। यह शोध पत्र विविध स्रोतों के आधार पर अधोलिखित किया गया हैं।

मुख्य शब्द:

डॉ बी आर अंबेडकर, 'बाबा साहेब, अस्पृश्यता, वर्ण-व्यवस्था, जातिवाद, छुआछूत, दलित, शिल्पकार, बौद्ध धर्म, धम्म ।

डॉ भीमराव रामजी अंबेडकर भारतीय समाज के लिए एक महान नेता और समाज सुधारक थे। उन्होंने अपार समर्पण और उत्साह के साथ दलितों और उनके अधिकारों की उपेक्षा करने वाले समाज के खिलाफ लड़ा। उन्होंने भारतीय समाज को जातिवाद और असमानता से मुक्ति दिलाने के लिए विस्तृत योजनाएं बनाईं और जातिवाद, अस्पृश्यता तथा वर्ण-व्यवस्था के खिलाफ सख्त रूप से उत्कृष्ट विचार किए और समाज में समानता एवं न्याय की दिशा में प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारतीय संविधान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कारण डॉ अंबेडकर को भारतीय संविधान के निर्माता के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने जीवन के अंत में बौद्ध धर्म को अपनाया जिससे उनका समाज समता वादी विचार और अंधविश्वासों के खिलाफ उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

डॉ बी आर अंबेडकर के द्वारा दलित अधिकारों की वकालत

विदेश में अपनी पढ़ाई पूरी करने के पश्चात्, डॉ बी आर अंबेडकर वर्ष 1920 के दशक की शुरुआत में भारत लौट आए। उस समय भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक अन्याय भीमराव रामजी को जाति भेदभाव के उन्मूलन और हाशिए पर रहने वाले लोगों के उत्थान के लिए आजीवन संघर्ष की राह पर ले गया। बाबासाहेब का मानना था कि केवल पर्याप्त राजनीतिक प्रतिनिधित्व ही अछूतों की सामाजिक स्थिति में सुधार ला सकता है। इसलिए, उन्होंने अपने समाचार पत्रों, सामाजिक- सांस्कृतिक मंचों और सम्मेलनों के माध्यम से अछूतों को संगठित करना शुरू किया। बाबासाहेब अंबेडकर के नेतृत्व में किए गए पहले प्रमुख सार्वजनिक कार्यों में से एक 1927 का महाड़ सत्याग्रह था, जिसका उद्देश्य महाराष्ट्र के महाड़ में सार्वजनिक कुएं से जल का उपयोग करने के दलितों के अधिकारों को स्थापित करना था। इसी तरह, 1930 के कलाराम मंदिर आंदोलन का उद्देश्य दलितों को हिंदू मंदिरों में प्रवेश करने का अधिकार सुरक्षित करना था।

1924 में, डॉ. भीमराव रामजी ने दलितों के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से बहिष्कृत हितकारी सभा (बहिष्कृतों के कल्याण के लिए समाज) की स्थापना की। उन्होंने दलितों की चिंताओं को आवाज देने के लिए "मूकनायक" (मूक के नेता), "बहिष्कृत भारत" (बहिष्कृत भारत) और "समता जनता" जैसे कई पत्रिकाएँ भी शुरू कीं।

डॉ बी आर अंबेडकर के द्वारा संघर्ष के लिए अपनाया गया मार्ग

सामाजिक सुधार के लिए कानूनी मार्गों के महत्त्व को पहचानते हुए, डॉ बी आर अंबेडकर ने भी ब्रिटिश अधिकारियों के सामने दलितों का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने लंदन में गोलमेज सम्मेलनों में दलितों के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया, और दलितों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए उनके लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों की वकालत की। बाबासाहेब के प्रयासों का परिणाम 1932 के पूना पैक्ट के रूप में सामने आया, जिसने आम निर्वाचन क्षेत्रों में दलितों के लिए आरक्षित सीटों का प्रावधान किया।

डॉ बी आर अंबेडकर का राजनीतिक जीवन

कई दशकों तक विस्तृत, डॉ अंबेडकर की राजनीतिक यात्रा विधायक, पार्टी नेता, भारतीय संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष और स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि मंत्री जैसी भूमिकाओं से भरी रही हैं। औपचारिक राजनीति में अपने पहले महत्त्वपूर्ण प्रयास के रूप में, डॉ अंबेडकर ने वर्ष 1936 में दलितों और मजदूर वर्गों के हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी की स्थापना की। पार्टी ने 1937 के बॉम्बे प्रेसीडेंसी चुनावों में चुनाव लड़ा और कुछ सफलता भी प्राप्त की, जिसने बाबासाहेब को एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया।

दलितों के मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक केंद्रित राजनीतिक प्रयास की आवश्यकता को पहचानते हुए, डॉ अंबेडकर ने 1942 में इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी को अनुसूचित जाति संघ में बदल दिया। संघ का उद्देश्य स्पष्ट रूप से दलितों को राजनीतिक कार्रवाई के लिए संगठित करना था, हालाँकि इसने राष्ट्रीय स्तर पर महत्त्वपूर्ण चुनावी सफलता हासिल करने के लिए संघर्ष किया। 30 सितंबर 1956 को, बाबासाहेब ने अपने पूर्व संगठन अनुसूचित जाति संघ को बर्खास्त करके रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया की स्थापना की घोषणा की। हालाँकि, नई पार्टी के गठन से पहले ही 06 दिसंबर 1956 को उनका निधन हो गया।

भारतीय संविधान का निर्माण

भारतीय राजनीति में डॉ बी आर अंबेडकर की सबसे स्थायी विरासत संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में उनकी भूमिका है, जो भारतीय संविधान की रूपरेखा तैयार करने के लिए जिम्मेदार थी। भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार के रूप में, डॉ अंबेडकर ने सुनिश्चित किया कि दस्तावेज में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के

सिद्धांत निहित हों। अस्पृश्यता के उन्मूलन और कुछ पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण जैसे प्रावधानों को शामिल करना जातिगत भेदभाव और असमानता के खतरों से मुक्त स्वतंत्र भारत के उनके दृष्टिकोण को दर्शाता है।

डॉ बी आर अंबेडकर – वायसराय की कार्यकारी परिषद में श्रम मंत्री

1942-1946 के दौरान डॉ अंबेडकर ने वायसराय की कार्यकारी परिषद में श्रम मंत्री के रूप में कार्य किया। अपने कार्यकाल के दौरान, डॉ भीमराव रामजी ने फैक्टरी अधिनियम 1946, ट्रेड यूनियन अधिनियम 1947 आदि सहित कई महत्त्वपूर्ण श्रम सुधारों को लागू किया और उनकी वकालत की। उन्होंने श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों की आधारशिला रखने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कर्मचारी राज्य बीमा (ESI) निगम और कर्मचारी भविष्य निधि योजना (EPF) के निर्माण का सक्रिय रूप से समर्थन किया, जो क्रमशः चिकित्सा बीमा और सेवानिवृत्ति लाभ प्रदान करते हैं।

स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि मंत्री

1947 में भारत की स्वतंत्रता के पश्चात्, डॉ अंबेडकर को जवाहरलाल नेहरू की कैबिनेट में देश के प्रथम विधि एवं न्याय मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया। इस क्षमता में, उनका सबसे उल्लेखनीय योगदान हिंदू कोड बिल की शुरुआत थी, जिसका उद्देश्य हिंदू मामलो के व्यक्तिगत कानूनों को संहिताबद्ध एवं सुधार करना था, तथा महिलाओं को व्यक्तिगत मामलों में समान अधिकार देना था। हालाँकि, बिल को संसद द्वारा पारित नहीं किया जा सका, जिसके कारण वर्ष 1951 में बाबासाहेब ने नेहरू मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया।

डॉ अंबेडकर का महत्त्वपूर्ण योगदान: आधुनिक भारत के मुख्य शिल्पकार के रूप में

डॉ बी आर अंबेडकर का भारतीय समाज में योगदान विशाल और विविध है, जो एक समाज सुधारक, अर्थशास्त्री, राजनेता और कानूनी विद्वान के रूप में उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को दर्शाता है। उनके कुछ प्रमुख योगदान इस प्रकार हैं:

• **भारतीय संविधान के निर्माता:** उनका सबसे स्थायी योगदान भारतीय संविधान का प्रारुप तैयार करना माना जाता है। प्रारुप समिति के अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने भारतीय संविधान को इस तरह से आकार दिया कि भारत के सभी नागरिकों के लिए न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व सुनिश्चित हो सके।

• **भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) की परिकल्पना:** डॉ अंबेडकर ने भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) की परिकल्पना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1925 में, उन्होंने भारतीय मुद्रा और वित्त पर रॉयल कमीशन (हिल्टन यंग कमीशन) के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत किए, जिसमें उन्होंने भारत के लिए एक केंद्रीय बैंकिंग प्रणाली की स्थापना का तर्क दिया। उनके विचारों ने आयोग की सिफारिशों को बहुत प्रभावित किया, जिसने RBI अधिनियम 1934 का आधार निर्मित किया। वह क़ानून जिसने भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) की स्थापना की।

• **जाति भेदभाव के खिलाफ संघर्ष:** अपने पूरे जीवन में उन्होंने दलितों और हाशिए पर रहने वाले समूहों के अधिकारों के लिए जोरदार अभियान चलाया, इस प्रकार उनके प्रयासों ने भारत में सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ावा दिया।

• **सामाजिक सुधारक और शिक्षाविद्:** शिक्षा की परिवर्तनकारी क्षमता को समझते हुए, बाबासाहेब ने दलितों के उत्थान के लिए शिक्षा के महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने कॉलेजों की स्थापना की और दलित समुदाय को जाति एवं सामाजिक असमानता की बेड़ियों को तोड़ने के साधन के रूप में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

• **महिला अधिकारों के नेतृत्वकर्त्ता:** डॉ. अंबेडकर महिला अधिकारों के प्रबल समर्थक थे और उन्होंने उन हिंदूगत कानूनों में सुधार लाने की दिशा में कार्य किया, जिनमें महिलाओं के साथ भेदभाव किया गया था। उन्होंने हिंदू कोड बिल पेश किया, जिसका उद्देश्य विरासत, विवाह और तलाक के मामलों में महिलाओं को समान अधिकार प्रदान करना था।

• **श्रमिक सुधार:** आधिकारिक पद संभालने से पहले ही, डॉ अंबेडकर ने अपने संगठन इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी (ILP) के माध्यम से श्रमिकों के अधिकारों और कल्याण की वकालत की। बाद में, वायसराय की कार्यकारी परिषद में श्रम मंत्री के रूप में, उन्होंने भारत में श्रम सुधारों को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

• **राजनीतिक नेतृत्व:** राजनीति में अपने प्रवेश के माध्यम से डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने राजनीतिक नेतृत्व भी प्रदान किया।

• **साहित्य और लेखन:** डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर एक विपुल लेखक थे, तथा कानून, अर्थशास्त्र, धर्म और सामाजिक मुद्दों पर उनके कार्य अत्यधिक प्रभावशाली बने हुए हैं। उनकी पुस्तकें, जैसे “अस्पृश्यता का विनाश”, “शूद्र कौन थे?” एवं “बुद्ध और उनका धम्म”, दुनिया भर के पाठकों को प्रेरित करती रहती हैं।

निःसंदेह, डॉ अंबेडकर का विभिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान आधुनिक भारत के मुख्य शिल्पकार के रूप में प्रतिबिंबित करता हैं। बाबासाहेब अंबेडकर के दर्शन में सामाजिक न्याय, राजनीतिक सुधार और आर्थिक समानता सहित कई मुद्दे शामिल थे, जो लोकतंत्र, समानता और मानवाधिकारों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता पर आधारित थे। डॉ अंबेडकर एक बहुआयामी भारतीय प्रतीक थे, जिनका जीवन और कार्य देश के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य को आकार देते रहते हैं। समाज के हाशिए से उठकर स्वतंत्र भारत के सबसे बड़े नेताओं में से एक बनने का उनका सफर पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डॉ अंग्नेलाल, बाबा साहब, डॉ अंबेडकर-जीवन और दर्शन , पृ-49
2. डॉ अंबेडकर, भगवान बुद्ध और उनका धर्म, बुद्ध भूमि प्रकाशन, नागपुर, अनुवाद भदंत आनंद कौसल्यायन,1997
3. नानक चंद रत्तू कृत बाबा साहेब अंबेडकर, संस्मरण और स्मृतियाँ, सम्यक प्रकाशन दिल्ली, पृ सं-69
4. भद्राशील रावत कृत राष्ट्र निर्माण में बाबा साहेब अंबेडकर का योगदान, सम्यक प्रकाशन, पृ सं-87
5. प्रभाकर वैद्य, डॉ॰ आम्बेडकर आणि त्यांचा धम्म, 2000
6. सोहन लाल शास्त्री विधा वाचस्पति, हिन्दू कोड बिल और अंबेडकर, सम्यक प्रकाशन, पृ सं-53
7. सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत : डॉ. भीमराव अम्बेडकर – डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव, जन-सम्मान, नवम्बर-2005
8. ताराराम कृत श्रम कल्याण, श्रम सुरक्षा और भारत रत्न डॉ अंबेडकर, सम्यक प्रकाशन, पृ सं -42
9. दलित विमर्श : सन्दर्भ गाँधी, गिरिराज किशोर, पृ0-28, 29.
10. धनंजय कीर, डॉ बाबा साहब अंबेडकर: लाइफ एण्ड मिशन, पॉपुलर प्रकाशन
11. डॉ. डी आर जाटव, डॉ अंबेडकर का राजनीति दर्शन, समता साहित्य सदन, जयपुर
12. डॉ विजयकुमार पुजारी, बाबा साहब अंबेडकर: जीवन दर्शन, प्रकाशक भारतीय बौद्ध महासभा, दिल्ली प्रदेश

13. भद्रशील रावत कृत शूद्रों की स्थिति और डॉ अंबेडकर, सम्यक प्रकाशन, पृ सं- 27

14. डॉ धर्मकीर्ति कृत मानव अधिकारों के पुरोधा डॉ बी आर अंबेडकर, सम्यक प्रकाशन, पृ सं-67

15. बाबा साहेब डॉ अंबेडकर सम्पूर्ण वांड़मय, पृ सं- 54

16. "डॉ. अम्बेडकर ने हिन्दू धर्म क्यों छोड़ा?" नवभारत टाइम्स ब्लॉग, 26 जून 2015

17. Mahabodhi and United Buddhist World, Vol-40, P-392 published-1931

18. चंद्रभान प्रसाद दलित, "'क्या मनुस्मृति दहन दिन मनाएगा संघ?'" BBC News हिंदी. मूल से 28 जून 2018